पीलू की गुल्ली

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)
978-81-7450-888-1

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल बिस्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

पीलू की गुल्ली

गुल्ली

पीलू

मम्मी

एक दिन रानी के घर में सुबह से हलचल थी।
सुबह से ही आवाज़ें आ रही थीं।
आवाज़ों से रानी की नींद खुल गई।
उसने रमा को भी जगा दिया।

रानी उठकर आँगन में आ गई।
आँगन में बहुत चहल-पहल थी।
सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे।
वह सबको देखने लगी।

पापा चूल्हे पर पतीला चढ़ा रहे थे।
पतीले में पानी और दाल-चावल थे।
मम्मी दो बोरे लेकर बैठी हुई थीं।
वह बोरों में से गुड़ निकाल रही थीं।

रानी ने देखा कि पीलू गाय को बछिया हुई है।
वह पीलू के बगल में ही बैठी हुई थी।
पीलू गाय अपनी बछिया को चाट रही थी।
बछिया भी प्यार से अपना मुँह चटवा रही थी।

रानी भागकर बछिया के पास गई।
बछिया काले रंग की थी।
मम्मी भी रानी के पास आ गईं।
वह पीलू को गुड़ खिलाने लगीं।

रानी ने बछिया को छू कर देखा।
वह बहुत चिकनी-चिकनी थी।
बछिया के बाल चमक रहे थे।
उसकी पूँछ छोटी-सी थी।

बछिया बार-बार खड़ी होने की कोशिश कर रही थी।
वह लड़खड़ा कर बैठ जाती थी।
रानी ने उसकी कमर सहलाई।
रमा भी वहाँ आ गई।

रमा ने पीलू को गुड़ दिया।
रमा भी बछिया को छू-छूकर देखने लगी।
रमा और रानी बहुत खुश थीं।
उन्हें बछिया को देखकर बहुत मज़ा आ रहा था।

रमा और रानी ने बछिया का नाम गुल्ली रखा।
उन्होंने मम्मी को उसका नाम बताया।
वे वापस गुल्ली के पास आकर बैठ गईं।
वे गुल्ली के पास से हटना नहीं चाह रही थीं।

मम्मी ने रमा और रानी को कुछ कतरनें दीं।
उन्होंने गुल्ली के लिए रस्सी बनाने को कहा।
गुल्ली को बाँधने वाली रस्सी नरम होनी चाहिए।
दोनों बैठकर रस्सी बुनने लगीं।

रमा ने देखा बाबा गुल्ली को धीरे-धीरे खींच रहे थे।
उन्होंने गुल्ली का मुँह पीलू के थनों पर लगा दिया।
गुल्ली दूध पीने लगी।
पीलू चुपचाप खड़ी हुई थी।

गुल्ली दूध पीती जा रही थी।
उसकी पूँछ इधर-उधर गटक रही थी।
इतने में मम्मी पीलू के लिए काढ़ा ले आईं।
पीलू काढ़ा पीने लगी।

थोड़ी देर में पापा ने गुल्ली को अलग कर लिया।
फिर मम्मी पीलू का दूध दुहने लगीं।
उस दिन पीलू का दूध कुछ अलग-सा था।
दूध पीला-पीला और फटा-फटा था।

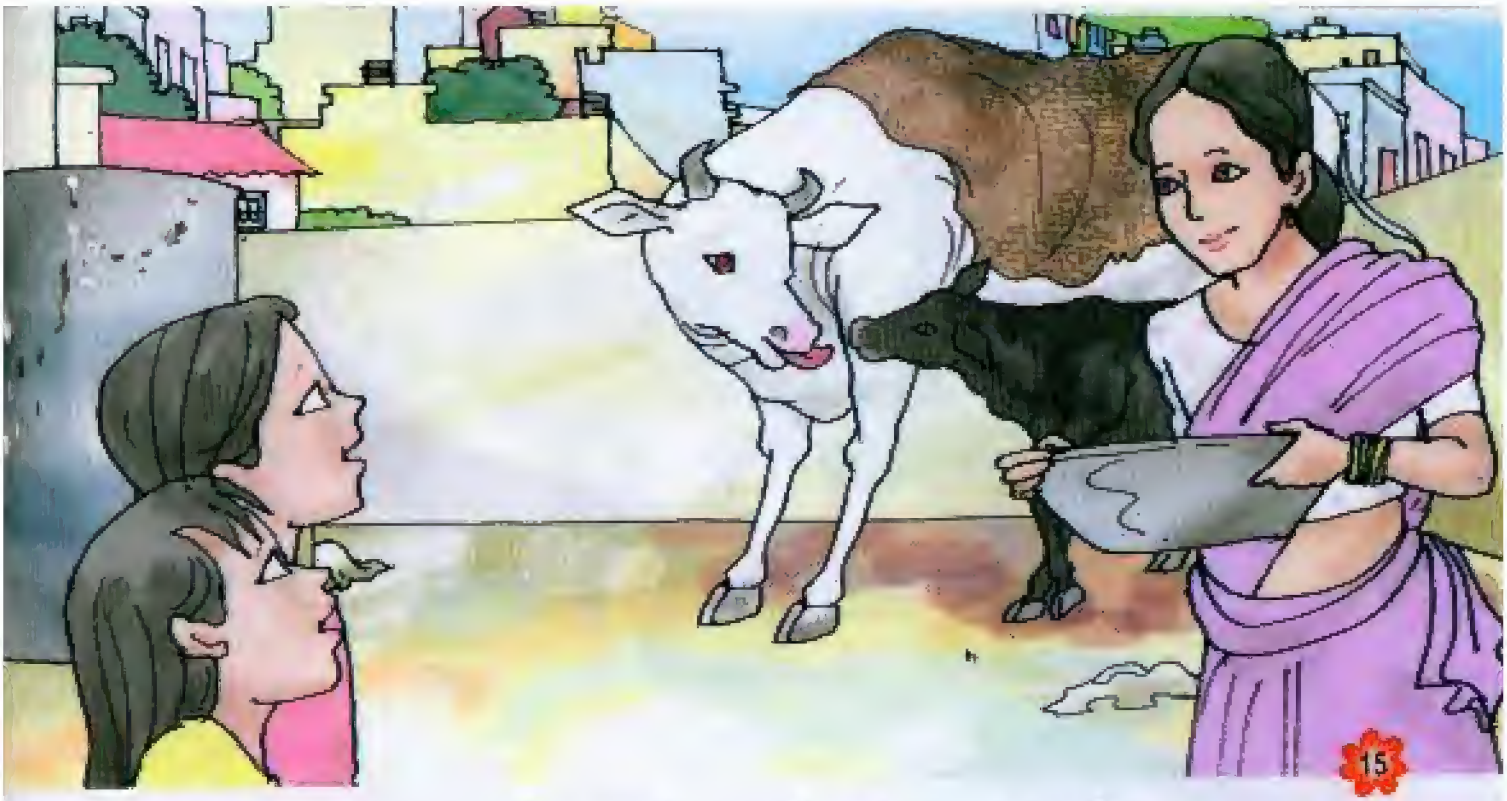

रमा और रानी मम्मी के पास पहुँची।
उनका मन स्कूल जाने को नहीं था।
मम्मी उनकी बात मान गईं।
लेकिन मम्मी ने एक शर्त रखी।

मम्मी ने कहा कि उन्हें गुल्ली को नहलाना पड़ेगा।
यह सुनकर दोनों खुश हो गईं।
रमा और रानी ने धीरे-धीरे गुल्ली को नहलाया।
उन्होंने गुल्ली को नहलाकर नरम रस्सी से बाँध दिया।

स्तर 1

स्तर 2

स्तर 3

स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

2087

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING